

125th Birth Anniversary of SYAMA PRASAD MOOKERJEE

Syama Prasad Mookerjee was born on 6 July 1901 in Calcutta (now Kolkata) into a distinguished Bengali family. His father, Sir Ashutosh Mookerjee, was a renowned educationist and the Vice-Chancellor of the University of Calcutta. Syama Prasad Mookerjee was academically gifted and completed his education at the prestigious Presidency College, Calcutta. He studied law at the University of Calcutta and, in 1926, joined Lincoln's Inn in London, becoming a member of the English Bar in 1927.

As a young student, Syama Prasad Mookerjee was inspired by the growing freedom movement led by leaders like Mahatma Gandhi, which motivated him to dedicate himself to India's independence. In the 1920s, he joined the Indian National Congress and became an active member of its youth wing. However, his vision for India, especially regarding the role of princely states and the structure of the Indian Union, was distinct. From 1943 to 1946, he served as the President of the All India Hindu Mahasabha. Syama Prasad Mookerjee was elected to the Constituent Assembly from West Bengal. He actively participated in debates on minority rights, regional languages, and other key issues.

On 21 October 1951, Syama Prasad Mookerjee founded the Bharatiya Jana Sangh in Delhi. He strongly opposed the special status granted to Jammu and Kashmir under Article 370 and advocated its abrogation. During a visit to Jammu in August 1952, addressing a massive gathering, he famously said, "I will either get you the Indian Constitution or sacrifice my life for it." His slogan "One Nation, One Constitution," reflected his belief in equal rights for all Indian citizens, regardless of their state. Syama Prasad Mookerjee maintained a strong connection with South India through his contributions to the fields of education, industry, and linguistic inclusivity. He served as the Vice-Chancellor of the University of Calcutta from 1934 to 1938 and was a member of the Council of the Indian Institute of Science (IISc), Bengaluru, in 1935. As an educationist, he emphasised the importance of learning one's mother tongue while appreciating other languages. He advocated for the inclusion of regional languages like Tamil and Telugu in university curricula.

As a Minister for Industry and Supply, he worked to support small-scale industries, including taking concrete steps to aid handmade matchstick producers in Tamil Nadu – such as tax relief and ensuring access to raw materials and transport. He also encouraged the Madras Government to organise these workers

into cooperatives for long-term sustainability. These interventions highlight his commitment to inclusive national development and his engagement with concerns of the southern states. Integral Humanism, later shaped by Pandit Deendayal Upadhyaya, advocated a development model based on India's cultural and civilisational values – balancing material progress with spiritual and cultural well-being. While the term became popular after Syama Prasad Mookerjee's time, his ideas and speeches reflected this philosophy. He consistently emphasised that India's progress should not blindly imitate the West but be rooted in its own cultural and moral foundations. Speaking at the 1936 convocation of Nagpur University, he stated: "Generally speaking, an Indian university must regard itself as one of the living organs of national reconstruction. It must discover the best means of blending together both the spiritual and the material aspects of life."

Antyodaya, or the upliftment of the last person in society, was central to the social vision of leaders like Mahatma Gandhi and later Pandit Deendayal Upadhyaya. While Syama Prasad Mookerjee did not use the term directly, his political and educational work emphasised justice, equality, and inclusion, particularly for the underprivileged. At the 1940 convocation of Agra University, he clearly articulated this thought: "Political and social justice requires, not the disintegration of a country and destruction or humiliation of a class which shows initiative, intelligence and drive, but equality of opportunity for all, genuine freedom for self-fulfilment, in which all men irrespective of caste or creed may share." Syama Prasad Mookerjee's luminous journey came to an untimely end on 23 June 1953, marking a solemn moment in India's history.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp on 125th Birth Anniversary of Syama Prasad Mookerjee, a visionary leader, educationist, and nationalist whose ideals continue to guide and influence India's journey. This stamp is a tribute to his lasting contributions to India's political and educational landscape, his commitment to national unity, and his belief in inclusive development rooted in Indian values.

Credits:

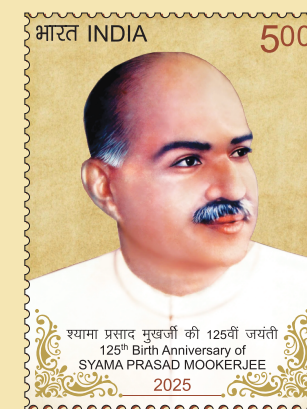
Stamp/FDC/Brochure/ : Smt. Nenu Gupta

Cancellation Cachet

Text : Referenced from content provided by Proponent.



डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती
125th Birth Anniversary of
SYAMA PRASAD MOOKERJEE

विवरणिका BROCHURE

श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती

श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता (अब कोलकाता) के एक प्रतिष्ठित बंगाली परिवार में हुआ। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी प्रसिद्ध शिक्षाविद् और कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति थे। श्यामा प्रसाद अत्यंत प्रतिभाशाली छात्र थे। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कलकत्ता के प्रतिष्ठित प्रेसीडेंसी कॉलेज से पूरी की और तत्पश्चात् कलकत्ता विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई की। 1926 में वे लंदन में 'लिकन्स इन' से जुड़े और 1927 में 'इंग्लिश बार' के सदस्य बने।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी पर उनके छात्र जीवन के दौरान महात्मा गांधी जैसे अग्रणी नायकों के नेतृत्व में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा। इस आंदोलन ने उन्हें देश की स्वतंत्रता के लिए खुद को समर्पित करने हेतु प्रोत्साहित किया। 1920 के दशक में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए और इसकी युवा शाखा के सक्रिय सदस्य रहे। हालांकि कांग्रेस के सक्रिय सदस्य होने के बावजूद भारत के संदर्भ में उनका विजन भिन्न था, विशेषतः रियासतों की भूमिका और भारतीय संघ की संरचना के संबंध में। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने वर्ष 1943 से 1946 तक अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। पश्चिम बंगाल से संविधान सभा के लिए निर्वाचित हुए श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों, क्षेत्रीय भाषाओं और अन्य प्रमुख मुद्दों पर संविधान सभा में हुई चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया।

21 अक्टूबर 1951 को श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने दिल्ली में भारतीय जनसंघ की स्थापना की। वे, अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को दिए गए विशेष दर्जे के प्रबल विरोधी थे और उन्होंने इसे समाप्त करने की पुरजोर वकालत की। अगस्त 1952 में अपने जम्मू दौरे के दौरान, एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था, "या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊंगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपना जीवन बलिदान कर दूंगा"। "एक देश, एक विधान" का उनका नारा, सभी भारतीय नागरिकों, चाहे वे किसी भी राज्य के हों, के लिए समान अधिकारों के प्रति उनके दृढ़ विश्वास को दर्शाता है। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने शिक्षा, उद्योग जगत और भाषाई समावेशिता के क्षेत्रों में अपने योगदान के माध्यम से दक्षिण भारत के साथ सुदृढ़ संबंध स्थापित किए। वर्ष 1934 से 1938 तक वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 1935 में वे भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलूरु परिषद के सदस्य भी रहे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने मातृभाषा के महत्व पर बल दिया। शिक्षाविद् के रूप में वे मातृभाषा सीखने के साथ-साथ अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने के भी पक्षधर थे। उन्होंने तमिल और तेलुगु जैसी क्षेत्रीय भाषाओं को विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल करने की भी वकालत की।

उद्योग और आपूर्ति मंत्री के रूप में, उन्होंने लघु उद्योगों का समर्थन किया। उन्होंने तमिलनाडु के 'हस्तनिर्मित माचिस' उत्पादकों की सहायता के लिए अनेक ठोस कदम उठाए जैसे कि कर में राहत प्रदान करना तथा कच्चे माल एवं परिवहन सुविधाओं की सुलभता सुनिश्चित करना। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने सतत विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मद्रास सरकार को इन उद्योगों में लगे श्रमिकों के

कल्याण हेतु सहकारी समितियों के गठन के लिए भी प्रोत्साहित किया। उनके ये कार्य, राष्ट्र के समावेशी विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और दक्षिणी राज्यों की समस्याओं के प्रति उनकी संवेदनशीलता के प्रतीक हैं।

'एकात्म मानववाद' भारत के सभ्यतागत और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित विकास मॉडल अर्थात् भौतिक प्रगति तथा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कल्याण के बीच संतुलन बनाए रखने पर जोर देता है। यद्यपि यह सिद्धांत श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवनकाल के बाद, डॉ पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार के रूप में लोकप्रिय हुआ, तथापि श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों और भाषणों में इस दर्शन की स्पष्ट झलक देखने को मिलती थी। उन्होंने लगातार इस बात पर जोर दिया कि भारत की प्रगति पश्चिम के अंधानुकरण पर नहीं बल्कि भारत के सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने 1936 में नागपुर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में कहा : "भारतीय विश्वविद्यालयों को भारतीय पुनर्निर्माण की प्रक्रिया का सजीव अंग होना चाहिए। साथ ही, विश्वविद्यालयों को यह भी चाहिए कि वे जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक, दोनों, पहलुओं को एकाकार करने की दिशा में पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाएं।"

अंत्योदय अर्थात् समाज के प्रत्येक व्यक्ति के उत्थान का सिद्धांत, पहले महात्मा गांधी और बाद में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे अग्रणी नेताओं के सामाजिक दृष्टिकोण का केंद्रबिन्दु रहा। यद्यपि, श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने प्रत्यक्ष रूप से इस शब्द का प्रयोग नहीं किया, तथापि उन्होंने अपने राजनीतिक और शैक्षणिक कार्यकलापों में सभी के लिए विशेषकर पिछड़े और वंचित वर्ग हेतु न्याय, समानता और समावेशिता पर बल दिया। वर्ष 1940 में, आगरा विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उन्होंने अपने इस विचार को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया कि: "राजनीतिक और सामाजिक न्याय के लिए किसी देश को विघटित करना या किसी ऐसे वर्ग-विशेष का अनिष्ट या तिरस्कार करना जरूरी नहीं है, जो इस प्रकार के न्याय के लिए पहल करे या उसके लिए प्रेरित दिखे, बल्कि इसके लिए जाति या संप्रदाय से ऊपर उठकर सभी लोगों के लिए समान अवसर तथा आत्म-सम्मान से जीने की वास्तविक स्वतंत्रता उपलब्ध कराना अपेक्षित है।" दुर्भाग्यवश, श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जीवन यात्रा 23 जून, 1953 को असमय ही समाप्त हो गई। यह भारतीय इतिहास के सबसे पीड़ादायक क्षणों में से एक था।

डाक विभाग, दूरदर्शी नेता, शिक्षाविद् और राष्ट्रवादी नायक श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। उनके आदर्श आज भी हमें प्रभावित करते हुए हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। यह डाक-टिकट, भारत के राजनीतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में उनके असीम योगदान, राष्ट्रीय एकता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और भारतीय जीवन-मूल्यों पर आधारित समावेशी विकास के प्रति उनके अडिग विश्वास को प्रतिबिंबित करता है।

आभार :

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/श्रीमती नीनू गुप्ता
विवरणिका/विरूपण कैंशे
पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक-टिकटें	: 202800
Stamps Printed	: 202800
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00